(४) वार्ता ४१ गोविन्द दवे सांचोरा पृष्ठ १२६
(५) " ४२ राजदवे माधोदवे सांचोरा पृष्ठ १२८
(६) " ४३ श्लोक दास सांचोरा पृष्ठ १३६
(७) " ४४ ईश्वरदास सांचोरा पृष्ठ १३६
(८) " ६० भगवानदास भीतरिया पृष्ठ १६६

ऊपर सांचोरा नीचे के सांचोरा बीच के जोंशी तीन ये भी सांचोरा ही है सके है। अतः तीन नाम या प्रकार है—

(९) वार्ता ३६ जगन्नाथ जोशी } पृष्ठ ११०
(१०) " ३७ जगन्नाथ जोशी की माँ } " ११६
(११) " ३८ नरहरी जोशी, जगन्नाथ जोशी }

या प्रकार एकादश सेवक सांचोरा भये।

गुसांईजी विट्ठलनाथजी के सेवक साँचोरा—

(१) वार्ता ६ कृष्णभट्ट, (पद्मरावल के बेटा) साँचोरा पृष्ठ ४१
(२) " ७४ दो भाई साँचोरा " १७५
(३) " १४५ भीमजी दवे साँचोरा " २५६
(४) " १४३ आनन्ददास सांचोरा " २५७
(५) " १६५ गोकुल भट्ट, कृष्णभट्ट [गोविन्द भट्ट के बेटा] " २८८
(६) " १७२ भगवानदास भीतरिया साँचोर ा(गुजराती) " २६७
(७) " २०८ पुरुषोत्तमदास जी साँचोरा " ३४५

नैमित्तिक उत्सव

निमित्त को लेकर जो उत्सव किये जाय वह नैमित्तिकोत्सव (मनोरथ) कहे जाँय हैं। यह नैमित्तिकोत्सव आचार्यन के प्राकट्योत्सव गोस्वामी बालकन के जन्म दिन उत्सव तथा छप्पन भोग चार स्वरूपोत्सव पाँच छः सात स्वरूपोत्सवादि हैं। इनमें बारह महीना के मनोरथ उत्सव शामिल हैं। नैमित्तिकोत्सव की परिभाषा मनोरथ भी है सके। जैसे कोई निमिति लेकर मनोरथ करे सर्वप्रथम गोस्वामीति० दुहरे मनोरथ कर्ता दाऊजी ने षड्रितु विलास मनोरथ कियो। गोस्वामीतिलक गोवर्द्धनेशजी ने सर्वप्रथम हांडी उत्सव कियो तथा अन्य आचार्यन ने छप्पन भोगादि किये।

यह मनोरथ नैमित्तिकोत्सव चार यूथ नायिकान के ओर से तीन-तीन मास की सेवा में होय है उनमें हर नायिका के समय में एक महोत्सव यानी उद्यापन को स्वरूप होय है। आचार्यन ने सारे उत्सव मनोरथ तथा स्वरूपन के विग्रह प्राकटय एवं लीलादि श्रीमद्भागवत दशम स्कन्ध की लीला में तथा रास पञ्चाध्यायी की प्राण भूता द्वादश अंग मानिकै द्वादश मास लीला में उत्सव मनोरथ किये मनोरथ की परिभाषा सुबोधिनी में निम्न प्रकार है :—

मनोरथ—मन के उत्साह की अभिव्यक्ति इच्छा लिप्सा कामना पूरक कार्य क्रम ही मनोरथ होय है। युगलगीत के २२ श्लोक में सुबोधिनी में या प्रकार वर्णन मिले हैं।

"मनोरथान्तं श्रुतयो यथाययुः"

मनोरथान्तं ययुरिति। ताभिर्यथा कथंचित् सम्बन्धो अभिलषितः। जातस्तु-ततो अनन्तगुण सामग्री सहितः। अतो मनोरथस्यान्तो यत्र सादृशं ययु अनभिलषितं कथंप्राप्नुयुः। श्रुतयो यथेति" श्रुतयोहिनिरन्तर भगवद् गुण पराः"

रास पञ्चाध्यायी के द्वादश अंगभगवदीयन ने तथा टीकाकारन ने ये द्वादश माने है उन्हें ही द्वादश मास की सेवा में सम्मिलित माने हैं—

(१) वंशीध्वनी (२) गोपिन को अभिसार (३) कृष्ण के साथ बातचीत (४) रमण (५) राधा को ले जानो बातचीत ओर (६) पुनः प्राकटय (७) गोपिन के दिये आसन पर विराजनो (८) गोपिन के प्रश्नन को उत्तर (९) महारास (१०) नृत्य (११) क्रीड़ा वन-विहार (१२) जल-विहार।

चार यूथाधियान के वर्णन हरिरायजी एवं द्वारकेशजी आदि ने विशद वर्णन कियो है कछु सूरदासजी एवं गोस्वामी विट्ठलवर के उधृत करे है।

स्यामिनीजी (१) राधा चतुश्लोकी प्रार्थना एवं दान लीला में चन्द्रावलीजी एवं ललिताजी की प्रार्थना जन्माष्टमी में जमुना प्रार्थना सूरसारावली में सूरदास जी नो वर्णन कियो है तथा अन्य भक्तनने भी चार यूथाधिपान के वर्णन किये श्रुतिरूपा तुर्यप्रिया ऋषिरूपा गोपकुमारिका नित्य सिद्धा वही चन्द्रावलीजी की यूथ की सहचरी ऋषि रूपा ललिताजी के यूथ की सहचरी नन्द कुमारिका गोप कुमारिका श्री राधिकाजी की सहचरी यमुना तुर्यप्रिया।

राधा प्रार्थना—

संविधाय दशने तृणंविभो—प्रार्थये ब्रज महेन्द्र नन्दन।
अस्तुमोहन तवातिवल्लभा—जन्म-जन्मनि त्वदीश्वरी प्रिया।

चन्द्रावली प्रार्थना चाह—

"अशेष सकृतोदयैररिवलमङ्गलैविधसा,
मनोरथ शतैसदा मनसिभापितै • निर्मिता।
अहल्यतिमनोहरेनिज गृहाविहारेच्जया,
सरपी शतवृताचलद् ब्रजवनेषु चन्द्रावली।" भृ० तिलक

ललिता प्रार्थना चाह—

"चिरादासक्ता सा कृततनुरसक्ता धृतिकृत्ता,
तदाराधावाधा शत वलितभावा प्रिय सखी।
क्वचित् कुञ्जेगुञ्जन्मधुपमुखरे धीरपवना,
श्रितदीनालीनानिज सहचरीमाह ललिताम्।"

जमनाजी प्रार्थना चाह—

"वृन्दावने चारु वृहद् वने मन्,
मनोरथे पूरय सूर सूते।
दृग गोचरे कृष्ण विहार एनं,
स्थिति स्त्वदीये तटएव भूयात्।"

सूरसारावली—

श्रुतिरूपा—

दर्शन दियो कृपाकर मोहन वेग दियो वरदान।
आगम कल्परमण तव ह्वै है श्रीमुख कही वखान॥
सो श्रुति रूप होय ब्रजमन्डल कीनो रास विहार।
नवल कुञ्ज में अंस बाहुधर कीन्ही केलि अपार॥

ऋषिरूपा—

पुनि ऋषिरूप रामवर पायो हरि सो प्रीतम पाय।
चरन प्रसाद राधिका देवी उन हरि कण्ठ लगाय॥
वृन्दावन गोवर्द्धन कुञ्जन यमुना पुलिन सुदेस।
नित प्रतिकरत बिहार मधुर रस स्यामा स्याम सुदेस॥

गोपकुमारिका—

प्रातकाल अस्नान करन को यमुना गोपी सिधारी।
लेकर तीर कदम्ब चढ़े हरि विनवत है ब्रजनारी॥
दे वरदान संग खेलन को शरद रेन जब आई।
रचिके रास सबन सुख दीनो रजनी अधिक कराई॥

तुर्यप्रिया जमनाजी—

कबहू केलि करत जमुना जल सुन्दर सरद तडाग।
कबहुक मधुर माधुरी झूलत आनन्द अति अनुराग॥

"स्ववंशेस्थापिताशेष" की टीका में श्रीगोकुलनाथजी स्वामिनीजी श्री महाप्रभू को निरधारित करें के अपने वंश में ही है।

"तस्माद् वस्तु विचारे ध्रियमाणे अग्नि वंशस्यवायं धर्मोस्मि"

"तद्दानतु वल्लभागिनवंशेपि श्रीमत् स्वामिनीनां कृपापूर्ण प्रमेयवलेनैव भवति" नान्यैः साधनैः इत्यादि।

आचार्य साक्षाद्भगवन्मुखार्विन्द फलभक्ति मागीधिष्टाचाछिर हाग्म्या मकत्वात् परम सौन्दर्य साकार निखिल भाद सम्पत्यात्मकत्वादनेकरसाद्यनुकरण लीलात्मकाचाधरं मधुरमित्यारभ्प फलितं मधुरं इत्यादि।

"भावाग्निमूर्तिमत्वात्स्वरूप भावना भावान्यात्मकत्वाल्लीला भावना भावाग्न्यामकामात् भाव भावना भावाग्म्याकत्वात् समुदायत्वेन सर्वलक्ष युक्त

सूरसागर में सूरदासजी ने सखी वर्णन इतने प्रकार से कियो है—

राधा किन तेरो हार चुरायो।
ब्रज मुवतिन सब हिन में जानत घर-घर लेले नाम बतायो।
श्यामा, कामा, चतुरा, नवला, प्रमदा, समदा, नारी।
सुखमा, शीला, अनधा, नन्दा-वृन्दा, यमुना, सारी।
कमला, तारा, विमला, चन्दा, चन्द्रावली, सुकुमारी।
अमला, कुञ्जा, अबला, मुक्ता, हीरा, नीला, प्यारी।
सुमना, बहुला, चम्पा, जुहिला, ज्ञाना मानाभद्रा।

प्रेमा हंसा दामारूपां रंगा हरखा जाऊ।
दर्वा रम्भा कृष्णा ध्याना मेना नेना रूपा।
रत्ना, कुमुदा, मोहाकरुणा ललना लोभानूपा।
नेन में कहो कोने लीनो ताको नाम बताऊ।
सूर श्याम है चोर तिहारो मैं जानत हौं साहू॥

बारह मास में इन चार यूथाधिपान की प्रधान सेवा ने तीन-तीन मास आवे यासे ही तीन-तीन मास की सेवा तथा बीच में तथा अन्त में इनकी ओर से महोत्सव (उद्यापन) होय है और उपरोक्त रास के द्वादश अंग क्रम से लीला-युत होकर सेवा संवेष्ठित होवे।

प्रथम राधिकाजी श्रीस्वामिनीजी (महाप्रभूजी) की सेवा क्रम श्रावण भाद्रपद आश्विन चालीस दिन झांझे बजें तथा प्रिय प्रीतम के विविध मनोरथ होय समस्त भक्ताचार्यों कवियों साहित्यकों ने वर्षा वर्णन में झूला को वर्णन दम्पति को ही कियो है। यासे ही रासपञ्चाध्याई की श्रावण मास की लीला में अन्तर्ध्यान पूर्व एक गोपी केलिकर पधार चोटी गूंधन तथा शृंगारादि वर्णन मिले यासे या मास में भी एक ही गोपी श्रीस्वामिनीजी के साथ पधार कर झूलें या त्रैमासिक सेवा में नन्द महोत्सव पूर्व महाभोग आरोगनो ही उद्यापन होय है। यही महोत्सव होय जाय है।

भाद्रपद मास में रास पञ्चाध्यायी में गोपी गीत के बाद पुनः प्राकटय है। वही जन्माष्टमी तथा बाल भाव में अनेक कान्ताभाव संवेष्ठित लीला या मास में ही रसदान महादानादि लीला है जो आगे दान तथा जन्माष्टमी आदि में वर्णन करेंगे।

आश्विन प्रथम रास पञ्चाध्यायी के द्वादशांग वेणुनाद वही यहाँ दान साँझी साधनोपरान्त आश्विन शुक्ला में वेणुनाद पद होय महारास में परिणती होय यह तीन मास श्रावण भाद्रपद आश्विन तथा इनके विशेष उत्सव विशेष भाव विशेष सेवा के मासन में आवेगी इन्हें भक्तजन वल्लभ महाप्रभु की सेवाक्रम में निहित भी करें।

नमेभूयान्मोक्षो नपुनरमराधीशसदनं,
नयोगो न ज्ञानं न विषयसुखं दुःखकदनं
त्वदुच्छिष्टं भोज्यं तव पद जलं पेयमपि तद्,
रजो मूर्ध्नि स्वामिन्यनुसवनमस्तु प्रतिदिनम्॥

आगे तीन मास श्री ललिताजी की सेवाक्रम में तथा इनके विशेष उत्सव

मृगसर मास भर कीर्तन व्रत चर्य्या के तथा छप्पन भोग में महोत्सव (उ
रासपञ्चाध्यायी में सेवाक्रमाधार ही त्रैमासिक ललिता की सेवा
कार्तिक मास वेणुनादोपरान्त अभिसार यहाँ गोवर्द्धन पूजन हेतु समस्त
वासिन को पधारनो ललिताराधा संवाद अन्नकूट महायज्ञ आदि।

मृगसर गोपीन के वस्त्र पे विराजनो तथा प्रश्नन को सुननो पास ही साधन पथ हेतु खण्डिता व्रतचर्या मानादि सेवा क्रम घटा मंगल भोग पाछलीरातादि शृंगारादि होय है।

पोष रास के मध्य प्रसंग में गोपीन के प्रश्नन् की उत्तर देनो "भजतोनु-भजत्येकादि" उत्तर में ही विट्ठलवर गुसाँईजी को प्राकटय जिनने अष्टयाम अष्टछाप विधि लीलादि प्रकट कर रसदान कियो।

यह ललिताजी की सेवाक्रम के तीन मास को सेवाक्रम आगे ऋतु सेवा में वैशिष्टय लिखेंगे इन लीलान के लिये ललिताजी को स्वरूप श्री दामोदरदासजी के भाव से माने है।

गौरचने रुचिमनोहर कान्तिदेहां,
मायूर पिच्छतुलितुच्छविचार वेलां।
राधे तव प्रियसखीं चगुरूं सखीनां,
ताम्बूलभक्ति ललितां ललितां नमामि।

आगे चन्द्रावलीजी के तीन मास। ये स्वामिनीजीवत् है अतः गोकुलनाथजी में एवं मदनमोहनजी में आपको स्वरूप विराजे तथा सर्वत्र भाद्रपद शुक्ला पञ्चमी कों द्वितीय स्वरूपोत्सव माने इनके तीन मास रासपञ्चाध्यायी के आधार पर तीन लीला निहित है तथा ४० दिन झांझ बजे उत्सवडोल झूला विविध सामग्री अरोगे।

माघ—रासारम्भ में व्रजभक्तन के पधारे बाद उपदेश देकर लोटवे की आज्ञा होयवे से ही अनंग काम वर्धन वसन्त पञ्चमी में काम जन्म होय है।

फागण रासपञ्चाध्यायी में लघुरास वही होरी वसन्त फाग धमार लीला में झकझोरी तथा विविध खेल नाच आदि महारास रासपञ्चाध्यायी में कुञ्जादि भी लावें ये तीन मास श्री विट्ठलवर गुसाँईजी के भाव से भी वैष्णव भक्त माने हैं।

सदा चन्द्रावल्यां कुसुम शयनीयादि रचितुं,
सहासं प्रोक्ता स्व प्रणयिगृहचर्यः प्रमुदिता।
निकुञ्जे स्वान्योन्यं कृति विविध तल्पेषु सरसां,
कथां स्वस्वामिन्याः सपदि कथयन्ति प्रियतमाम्।

गो० द्वारकेशजी महाराज ने ५१ ब्रज ललनान के नाम गिनाये हैं—

ललिता, चन्द्रगा, ब्रजमंगल, मेनानैना, करुणा मोहा, कुमुदा, रत्ना, लोभा, ललना, रम्भा, कृष्धा, दुर्गा ध्याना, हरखा, रूपारंगा, हंर्शा दामा. प्रेमा, ज्ञाना, जुहिला, भामा, चम्पा, बहुला, सुमना, नीला, हीरा, मुक्ता, अमला, कुब्जा, विमला, समला, चन्द्रावली, तारा, कमला, यमुना, अमला, वृन्दानन्दा, शीला, अवला, सुखिया, प्रमदा, नवला, सुमिता, चतुरा, कामा, रसिका, श्यामा या प्राकार वर्णन है।

आगे तुर्यप्रिया जमुना महाराणी वैशाख में आपको जन्म भी माने और आपकी अनेक ऊष्णकालिक लीलायें हैं। यह आगे रितुन में वर्णन करेंगे जेष्ठ के मास में मास भर जमुना पद एवं वैशाख स्नान यात्रा पर सवा लक्ष आम अरोगे उत्सव रास में वन विहार उष्णकालिक लीला ज्येष्ठ जल विहार रास में महीना भर गुणगान अषाढ़ उष्णकालिक तथा कुशुम शृंगारादि।

मदीयभक्तसेवने कृतेहरिः प्रसन्नता,
मवापगोपिकापतिः समस्त कामदायिनी।
तदम्बु मध्य खेलन प्रसूत भावलज्जितः,
कलौ कलिन्द नन्दिनी कृपाकुलं करोतुयः।

हरिराय महाप्रभु ने स्वामिनीजी की चरण चिह्नन में द्वादश शक्ति मानी है शक्ति चिह्न एक में।

आच्छादिका, विक्षेपिका, योगमाया, वृन्दादेवी, चन्द्रावली, संकेतन, ललिता, विमला, नोवारी, चोवारी, आनन्दी, कात्यायनी।

(१) आच्छादिका रसलीलाच्छादन करें।
(२) विक्षेपिका लीला रस में विक्षेप आवे ताको निराकरण करें।
(३) योगमाया सामग्री सिद्ध करें।
(४) वृन्दादेवी वृन्दावन रितु सामग्री तैयार करें ताको पद नवरात्रि में गवे।
(५) चन्द्रावली प्रभुसो रमन करावे ये पद बधाई में।
(६) संकेता संकेत स्थल में ले जाय इनके पद हू नवरात्रि में गवे।
(७) ललिता मानादि में मनावे ये तो अनेक पदन से भूषित हैं।
(८) विमला विमल शृंगार करें इनके पद नवरात्रि में गवे।
(९) नोवारी नौतन रस वार्ता करें।
(१०) चोवारी चारों ओर आज्ञानुगामी होय सेवा करें।
(११) आनन्दी विहार में आनन्द दें।
(१२) कात्यायनी व्रत पूरन करें।

जगद्गुरु श्री वल्लभ महाप्रभू ने उत्सव मनोरथ शृंगारादि कितने किये, तथा सेवा बंधान को कहा रूप हतो ताको वर्णन—

सम्प्रदाय कल्पद्रुम के आधार पर—

भोर होत तन शुद्ध करि गोविन्द कुण्ड अनहाय।
मिले जाय ब्रजरायसों हिय हर्षित द्विजराय॥
स्वेत पिछोरा पाग अरु गुञ्जमाल पहराय।
मोर चन्द्रिका सीसधरि किय शृंगार हरसाय॥
दूधपाक करि छिप्रही निजकर भोग लगाय।
श्री गोवर्द्धन धरन के दर्शन बहुरि कराय॥

१ जन्माष्टमी—

श्रीगोवर्द्धन धरन कों जन्मोत्सवहि कराय।
गिरिपरिक्रमा मातु कों श्रीवल्लभ करवाय॥
नन्द महोत्सव आनन्दसौं श्रीवल्लभ द्विजराय।
कृष्ण रूप पहिचान के निज भक्तन मन पाय॥

२ अन्नकूटोत्सव—

श्रीगोवर्द्धन धरनकों गिरि गोवर्द्धन जाय।
अन्नकूट किय आनन्दसौं श्रीवल्लभ द्विजराय॥

३ बालकन को चरण स्पर्शोत्सव—

श्रीगोवर्द्धन धरनकों श्रीवल्लभ मनपाय।
मुदित श्रीविट्ठलनाथ कों सुभ शृंगार करवाय॥
मन इच्छित जु मनोर्थ किय सेवा विधि समझाय।
निजवल विद्या देत प्रभु बहुरि अडेल हि जाय॥

गुसाईजी श्री विट्ठलनाथजी कृत उत्सव मनोरथ—

१ नन्दमहोत्सव—

नवनीतप्रिय को जु फिर जन्मोत्सवहि बुलाय।
श्री गोवर्द्धन धरन के पलना मुदित झुलाय॥

२ अन्नकूटोत्सव—

श्रीगोवर्द्धन धरन को श्रीविट्ठल द्विजराय।
किय मनोर्थ परदेससों आत्मज सकल बुलाय॥
मथुरेशादिक षष्ट निधि पधराये द्विजराय।
पृथक्-पृथक् सुखपाल मधि गृह गृहतें हरखाय॥

नवनीत प्रिय लालयुत सप्तसरूप प्रमान।
कान्ह जगाये आनिके श्रीविट्ठल सुखदान।।
हटरी भोग सजायकें श्रीविट्ठल हरखाय।
श्रीगोवर्द्धन धरन युत सुन्दर सयन कराय।।
भोर जाय गृहजुप्रति राजभोग अरोगाय।
मथुरेशादिक सप्तनिधि सुखपालन पधराय।।
बालकृष्ण नटवरन को सम्पुट संग लिवाय।
पधराये गिरधर मुदित श्रीविट्ठल द्विजराय।।
श्रीगोवर्द्धन धरन के वाम भाग मथुरेश।
गोकुलेन्दु वामें जु फिर अग्र बहुरि विट्ठलेश।।
द्वारकेश दक्षिण भुजहि मन्मथ मोहन रूप।
गोकुलेश प्रभु अग्रही सोभित भूप अनूप।।
अग्रज मथुरानाथ के नटवरलाल सुजान।
द्वारकेश प्रभु अग्रही बालकृष्ण सुखदान।।
नवनीत प्रिय लालसों गोवर्द्धन पुजवाय।
पधराये गिरिधरन ये अग्रज विट्ठलराय।।
अन्नकूट को भोग धरि सुतन संग द्विजराय।
अर्धयाम को समय ले दर्शन दिये खुलाय।।

३ छप्पन भोग वर्णन—

बहुरि सर्वणिन सुष्टु लखि किय गिरधरन विवाह।
मात-भ्रात सुत ज्ञाति मध विट्ठलनाथ उमाह।।
पुत्र वधू कों संग ले गिरि गोवर्द्धन आय।
सरन लीन गिरधरन की श्रीविट्ठल द्विजराय।।
छप्पन भोग मनोर्थ करि मातुश्री मन पाय।
किय विवाह गोविन्द को श्रीमद् गोकुल आय।।

४ दीपोत्सव—

करि श्रीमन्त गोविन्द को श्री विट्ठल द्विजराय।
श्रीगोवर्द्धन धरन को दीपोत्सव किय जाय।।

५ फाग—

बहुरि आय गोपालपुर फाग मनोरथ कीन।

६ कुञ्ज—

श्रीगोवर्द्धनधरनकों मुदित जु फाग खिलाय।
फागन सुद ग्यारस हि कों श्रीविट्ठल द्विजराय।।

७ डोल—

गोवर्द्धन पुजवाय फिर मुदित जु डोल झुलाय।
पधराये गोकुल जु फिर श्रीविट्ठल द्विजराय।।

८ फूलमन्डनी—

सुमन भौन फिर करत नृप विट्ठलनाथ प्रवीन।

९ हिंडोला—

बहुरि आय गोपालपुर श्री विट्ठल द्विजराय।
सुमन हिंडोरा कीन बहु गिरधारी मन पाय।।

१० दान—

श्रीगिरधरजी के द्वितीय पुत्र दामोदरजी के प्राकट्य के बाद—

बहुरि जाय गोपालपुर दान मनोरथ कीन।
गोकुल में जु गुविन्द कों विट्ठलनाथ प्रवीन।।

११ दुहेरा मनोरथ—

श्रीगोवर्द्धनधरन के दर्शहि विरह विहाय।
किय ऊत्साह मनोर्थ बहु श्रीविट्ठल द्विजराय।।
बहुर जाय गोपालपुर देवदमन मन पाय।
नित्य नेग द्विगुणित जु किय श्री विट्ठल द्विजराय।।

गिरधरजी द्वारा मनोरथ (सतघरा पधरायकर) —

बहुरि जु गिरधरलाल कों गोपीनाथ सुजान।
किय शृंगार गिरधरन को मुदितजु भूपतिमान।
किय शृंगार गिरधरन को गिरधर लाल सुजान।
किय मनोर्थ उत्साह सों तात वचन परमान।

होरी मनोरथ और सर्वस्व अर्पण जाको प्राचीन चौखटा—

श्री गोवर्धननाथ ये गिरधर को मन पाय।
होरी खेलन मधुपुरी चलन कह्यो मुसकाय।
गोवर्धन की शिखरते गिरधरलाल सुजान।
पधराये गिरधरन कों निज इच्छा पहचान।
सोलह सों तेतीस के कृष्णपुरी मध आय।
फागन वद सातम हि कों किय मनोर्थ हरसाय।
भेट कीन निज गृह सकल गिरधरलाल कृपाल।
घर घर प्रति मथुरा बसे आनन्द भयहु विसाल।

नित नूतन गिरधरन कों गिरधर फाग खिलाय ।
सुमन मण्डनी फिर करत आनन्द हृदयहढाय ।

ो हरिराय महाप्रभु के समय ३७ उत्सव थे जो इस पद में आप श्रीने
र्णन किये हैं—

रहो, मोहि स्री वल्लभ गृह भावे

× × ×

१:जन्माष्टमी

जन्म दिवस जब मेरो आवे आंगन चौक पुरावे ।
बाजे बाजत बहु विध द्वारे बंदनवार बंधावे ॥

२ नन्दमहोत्सव

पलना झुलावत विविध भाँति के रंगन रंग सुवावे ।
दधिकांदो अति करत प्रीतसों फूली अंग न समावे ॥

३ राधाष्टमी

रावल मे राधामंगल कीरति जग मधि बधाई गावे ।

४ दान एकादशी

लीला दान महा रजनी में करि सिर मुकुट धरावे ।
दानीराय नामधरि मेरो कर में लकुट गहावे ॥

५ वामन द्वादशी

वामन रूप धर्यो पृथ्वी में बलिके द्वारे आवे ।
तीन पेंड धरती जब माँगी सो हरि कहूँ न समावे ॥

६ साँझी

साँझी चीति रतन थारी में वारत साँझी गावे ।

७ नव विलास

नव दिन नये भोग धरि मोकों विधि सों रीझ रिझावे ।

८ दशहरा

विजै करन कों दशमी के दिन राम लंक को धावे ।
जव अंकुर सिर पै धारि के विजै महूरत सजावे ॥

९ शरद पूनम

पूनम सरद रात दिन मेरो नटवर भेष वनावे ।
मोर मुकुट काछनी पीताम्बर राग विलावहि गावे ॥

१० धनतेरस

धनतेरस दिन धन धोवन मिस धन इक मोहि जनावे ।
विविध सिंगार भोग रस अरपत ब्रज भक्तन मन भावे ॥

११ रूप चौदस

रूप चतुर्दशी मंगल दिन लखि अंग अंग उवटावे ।
विविध भाँति पकवान मिठाई लै लै भोग धरावे ॥

१२ दिवाली कान जगाई

सुरभी वृन्दन न्यौत कुहू निसि सुरभी कान जगावे ।
दीप दान दे निसि हटरी में चौपड़ मोहि खिलावे ॥

१३ अन्नकूट

प्रात भये गोधन पूजन करि मलरा ग्वाल गहावे ।
विधि सो अन्नकूट रचि मोको गोधन लीला गावे ॥

१४ भाई दूज

भाई दूज भावे जमुना कों विधि सो न्यौत जिमावे ।
बहिन सुभद्रा तिलक करत है आशिष वचन सुनावे ॥

१५ गोपाष्टमी

गोप अष्टमी गाय चराई ग्वालन के संग धावे ।
धोरीधूमर गाँग बुलावत मुरली मधुर बजावे ॥

१६ प्रवोधिनी

कार्तिक सुद एकादशी शुभ दिन ईख सु कुञ्ज वनावें ।
पाट सुरंग वसन पहरावे परम प्रमोद मनावे ॥

१७ गोपमास

धनुर्मास भोग विविध रचि चीर हरन जस गावे ।
व्रतचर्य्या लीलारस अनुभव गुप्त सो प्रकट दिखावे ॥

१८ विट्ठलनाथोत्सव

पोष मास नोमी को सुभ दिन उत्सव मो मन भावे ।
दैवी जीव उद्धारे मेरे द्वितीय सरूप धरावे ॥

१९ वसन्तोत्सव

रितु वसन्त जानि जिय अपने रूचि सुगन्ध छिरकावे ।
वसन्त वनावलिपै ब्रज ललना वहु विधि खेल मचावे ॥

२० रोपणी

डांडारोपन करि पूनम दिन सरस धमार हि गावे ।
बहु विधि हिल मिल चांचर खेले छिरके ओ छिरकावे ॥

२१ पाटोत्सव

सातम पाट उच्छव दिन मेरो केसर रंग छिरकावे ।
सुरंग गुलाल अबीर कुंकुमा बूका चन्दन लावे ॥

२२ कुंज

कुञ्ज बनाय प्रीति सों मोहन माथे मुकुट धरावे ।
चोवा चन्दन छिरकत कुंजन अद्भुत लीला गावे ॥

२३ होलिकोत्सव

पून्यो जहाँ तहाँ प्रकटी तब झूमक चांचर गावे ।
रात दिवस रस हो हो हो कहि गारी भांड भँडावे ॥

२४ डोलोत्सव

भोग राग बहु रचित डोल पर झोटा देय दिवावे ।
परवा डोल झुलाय प्रीत सों भारी खेल खिलावे ॥

२५ दुतियापाट

दुतियापाट सिंहासन रचि के तापे मोय बैठावे ।
मर्यादा चित लाय श्री वल्लभ दान देत हरखावे ॥

२६ फूल मण्डनी

विविध फूल रचि करत मण्डनी अद्भुत महल बनावे ।
कोमल गादी धरि ता उपर तापे मोय पधरावे ॥

२७ राम नवमी

चैत्र सुदी नोमी को सुभदिन रामचन्द्र घर आवे ।
मात कौसल्या कूखि पधारे जनम जयन्ति गावे ॥

२८ महाप्रभु उत्सव

वदि वैशाख एकादसी प्रकटे श्री वल्लभ मनभावे ।
मात इलम्मा करत वधाई वल्लभ नाम धरावे ॥

२९ अक्षय त्रितिया

सुदि वैसाख अक्षय तृतिया दिन सीतल भोग धरावे ।
चंदन लेप करत मेरे तन पंखा वायु डुरावे ॥

३० नृसिंह जयन्ति

सुद वैसाख नृसिंह चतुर्दसी भक्तन पक्ष दृढावे ।
जन प्रह्लाद राखि संकटते वेद विमल जस गावे ॥

३१ स्नानयात्रा

जेष्ठ पूनो स्नान यात्रा जल सीतल स्नान करावे ।
सीतल भोग धरत मन भाये मो मन ताप नसावे ॥

३२ रथयात्रा

सुद असाढ़ दुतिया पुष्य नक्षत्र रथ में मोहि बैठावे ।
सुरंग चलत अवनी पर चंचल राग मल्हार गवावे ॥
ब्रज भक्तन को सुख दे गिरधर भोग अनूपम लावे ।
गोपीजन मन मान्यो करि के सात आरती लावे ॥

३३ कशूम्बाछट—

ऊखासष्टी परम अनूपम कशूभी साज सजावे ।
बरखत मेघ घोर चहु दिसते लीला सकल बनावे ॥

३४ हिंडोला—

हिंडोला स्रावन में घर-घर रचि ललितादि झुलावे ।
पंच रंग वागे वस्त्र रंग रंगनि अभरण बहुत धरावे ॥

३५ ठकुरायो—

श्री ठकुरानी तीज हिंडोरा बरसानो मन भावे ।
कुञ्जन कुञ्जन झूल झुलावे सरस मधुर सुर गावे ॥

३६ पवित्रा—

पवित्र एकादशी निसि आज्ञा लै मन में मोद बढ़ावे ।
ब्रह्म सम्बन्ध किये श्रीवल्लग मिश्री भोग धरावे ॥
दैवी जीव उद्धार किये सब पवित्रा ले पहरावे ।
भयो प्रकट मारग वल्लभ को ब्रजजन मोद बढ़ावे ।

३७ रक्षाबन्धन—

राखी बाँधत बहन सुभद्रा मोतिन चौक पुरावे ।
तिलक करत रोरी अच्छत ले आरति वारत भावे ॥

फलस्तुति—

यह विधि नित नोतन सुख मोको वल्लभ लाड लडावे ।
में जानू के वल्लभ जाने के निज जन मन भावे ॥
अति मतिमंद कर्म जड कलिके जे मिथ्या करि जाने ।
रसिक कहे श्रीवल्लभ कृपा विन यह फल कबहु न पावे ॥

गुसाँईजी के चतुर्थ लालजी ने गोकुल समीपस्थ दाऊजी के मन्दिर को जीर्णोद्धार करायके प्रतिष्ठापित किये तब श्रीनाथजी कौ छप्पन भोग स्थाई रूप से १६३२ मृगसर शुक्ला १५ से आरम्भ कियौ। वह अद्यावधि चालू है यह बलदेवजी कौ उत्सव कह्यौ जाय है।

आपने जड़ाऊ कुल्हे जड़ाऊ मोजा मुकुट एवं मोती के नुपुर भेंट किये— आपने ही माला तिलक की रक्षा कीनी। अतः आपके उत्सव को दिन भर झाँझ बजायकर बधाई गाई जाय है।

श्रीनाथजी की प्राकट्य वार्ता पृष्ठ ४५ के अनुसार ६० शृंगार—

श्रीगोस्वामी गिरधरजी के पुत्र दामोदरजी के पुत्र विट्ठलेशरायजी जो टिपारा वारे कहे जाय हैं उन्हें श्रीजी द्वारा तिलकायत पद एवं साठ शृंगार करवे की आज्ञा दीनी गई तब से वे गोस्वामी तिलक कहाये। तथा इन शृंगारन में कोई शृंगार करें न करें वे साठ शृंगार निम्न प्रकार के हैं— श्रीहरिरायजी द्वारा उत्सवन के ३७ शृंगार टिकेत को तथा २३ शृंगार ये—

१	चैत्र शुक्ला १ नव वर्ष—	१
२	अषाढ़ शुक्ला १५—व्यास पूर्णिमा—	१
३	हिंडोलारम्भ—	२
५	बगीचा श्रावण को—	१
८	जन्माष्टमी के शृंगार—	३
९	आश्विन कृष्ण ३० कोटको—	१
१४	पांच शृंगार फागण के होली उपलक्ष में।	५
१८	दिवाली के पांच शृंगार हरिराय निर्मित—	५
१९	संक्रान्ति मकर—	१
२०	छप्पन भोग मृगसर शुक्ला—	१५

वि० १८७८ दाऊजी महाराज तिलकायत के पत्र के आधार पर।

गुसाँईजी के पुत्र गिरधरजी दामोदरजी के साथ—	१
कार्तिक शुक्ला १५ एवं माघ शुक्ला ४ दामोदरदास—	२
के जन्म दिन के किरीट शृंगार या प्रकार श्रीनाथजी—	१
ने ६० शृंगार की आज्ञा दे तिलकायत किये।	

बाद जितने तिलकायत भये उनके शृंगार भी दामोदरजी के वंश को प्राप्त भये। फिर श्री गो० तिलक गोवर्द्धनलालजी महाराज ने ये शृंगार तथा सेवाक्रम की अभिवृद्धि बढ़ाई, वह उनके जीवन चरित्र में लिखेंगे गोवर्द्धनलालजी द्वारा वृद्धि के शृंगार ये हैं—

"पाछलीरात, मंगला भोग, हरी घटा, मृगसर वदी में—	३
गुलाल, अबीर, चन्दन की चोलीन के शृंगार फागण में—	३
मृगसर सुदी में हीरा की पाग, रानी बहूजी के जन्म दिन—	१
चार द्वादशी दो मृगसर दो पोष के शृंगार—	४
प्रथम परदनी प्रथम आड़बन्द वनमाला गोवर्द्धन माला—	३
वैसाख, जेष्ठ, अषाढ़ में पाँच शृंगार एवं अभ्यंग—	५
के होयवे बाद स्नान को एक शृंगार—	१
मोतीकी आढ़बन्द परदनी—	१
ति० लाल गिरधरजी—१ पाँचस्वरूपोत्सव वैशाख—	२
चार स्वरूपोत्सव स्नान यात्रा जल भरे—	४
गिरधारीजी उत्सव जेष्ठ में अषाढ़ वद—	१
गोवर्द्धनेशजी तिलकायत, हाँडी उत्सव, गादी उत्सव, श्रावण—	१
गोवर्द्धनलालजी जन्म दिन विट्ठलेशरायजी दामोदरजी विट्ठलनाथजी—	३
सांझी को आरम्भ भाद्रपद में—	३
गोपीनाथजी उत्सव दुहेरा मनोरथकर्ता दाऊजी—	३
अक्षय नवमी आश्विन में गोविन्दजी गुलाबी छापा टिपारा कार्तिक—	२
छः स्वरूपोत्सव सात स्वरूपोत्सव गोविन्दलालजी	
दामोदरलालजी हीराटोपी —	४
तिलकायत दामोदरजी को उत्सव माघ में—	१
या प्रकार एकसो दो शृंगार पदन के साथ किये—	

तिलकायत ने ये शृंगार भी किये। वर्तमान गोविन्दलालजी ने चार छः शृंगार और बढ़ाये। या प्रकार पूरी माला शृंगार की निर्मित कीनी।

१	नाव के मनोरथ को शृंगार जेष्ठ शु०—	५
२	सात स्वरूपोत्सव श्रा० शु०—	९
३	नीरावेटीजी के जन्म दिन का शृंगार पदन के आधार पर—	१
४	जेष्ठ शुक्ला १२ गादी उत्सव जेठ शु०—	१०
५	चि० श्री दाऊजी बाबा साहब किरीट को शृंगार पोष कृ०—	१
६	चि० इन्द्र दमन बाबा को जन्म दिन गुलाल कुण्ड श्री अ० सौ विजय लक्ष्मी बहूजी को जन्म दिन।	१

श्री मूलचन्दजी मुखिया की प्रणालिका हस्तलिखित रा. कृ. मु. की कृपा से—

७ महादान भोपालशाई लहरिया मुकुट काछनी को— १

८ एवं श्रा० कृ० १२ पे सात शृंगार आपने बढ़ाये।

९ कुल तिलकायतो के १०९ शृंगार भये। ये चाहें जाको दे भी देहै तथा आप भी करें हैं पूर्व में तो आप ही करते रहे।

श्रीमद्भागवत महापुराण में उत्सव माला—

१ जन्माष्टमी एवं नन्द महोत्सव—

सविस्मयोत्फुल्ल विलोचनो हरिं सुतं विलोक्यानकदुंदु भिस्तदा।
कृष्णावतारोत्सव संभ्रमोऽस्पृशन मुदा द्विजेभ्योऽयुतमाप्लुतोगवाम् ॥
[१०-३-११]

२ नन्दमहोत्सव—

"नन्दस्वात्मज उत्पन्नो जातालहादो महामना" से १०-५-१-१७ तक।
महोत्सव के आधार पर श्रीजी में महामहोत्सव माने गये हैं।

३ वात्सल्य लीला के पांच शृंगार पांच श्लोकाधार पर—

कालेन व्रजतालपेन गोकुले राम केशवौ।
जानुभ्यां सह पाणिभ्यांरिङ्गमाणौं विजह्रतुः ॥ [१०-८-२१ से २५ तक

४ राधाष्टमी को उत्सव—

नमोनमस्तेस्त्वृषभाय सात्वतां विदूर काष्ठाय मुहुः कुयोगिनां।
निरस्त साम्याति शयेन राधसा सुधामनि ब्रह्मणिरंस्यतेनमः ॥
[२-४-१४]

सुबोधिनी में—

क्वचित् भगवत सिद्धिरस्ति राधस् शब्द वाच्या न तादृशीसिद्धी क्वचि दन्यत्र न वा।

५ दान एवं वामनद्वादशी—

तत्र गत्वौदनं गोपा याचतास्मद्विसर्जिता।
कीर्तयन्तो भगवत आर्यस्य मम चाभिधाम् ॥ [१०-२३-४]

६ वामन—

तस्मात्तत्वोमहीमीषद् वृणेदं वरदर्शभात्। [८-१९-१६]
श्रोणाया श्रवण द्वादश्यां मुहूर्तेऽभिजिते प्रभुः ॥
सर्वे नक्षत्रताराद्याश्चक्रुस्तज्जन्म दक्षिणम्। [८-१८-५]

७ सांझी—

कृष्णंनिरीक्ष्य वनितोत्सव रूप शीलं। [१०-२१-१२]

८ नव विलास—

एवं परिष्वङ्गकराभिमर्श स्निग्धेक्षणोद्दाम विलासाहासैः। [१०-३३-१७]

९ विजया दशमी विजयोत्सव—

बध्वोदधौरघुपतिर्विविधाद्रि कूटैः सेतुं कपींद्र करकम्पित भूरुहाङ्गैः।
सुग्रीव नील हनुमत्प्रमुखैरनीकैर्लङ्कां विभीषणदृशा विषदग्रदग्धां ॥
[९-१०-१६]

१० महारास—

रासोत्सवे सम्प्रवृत्तो गोपीमण्डल मण्डितः।
योगेश्वरेण कृष्णेन तासांमध्येद्वयोर्द्वयोः॥ [१०-३३-३]
प्रविष्टेन गृहीतांनां कण्ठे स्वनिकास्त्रियः।

११ अन्नकूट (महायज्ञ) दीपमालिकादि—

तस्माद् गवां ब्राह्मणानामद्रेश्चारभ्यतां मखः।
य इन्द्रयाग सम्भारा स्तैरयं साध्यतां मखः॥
पच्यतां विविधाः पाकाः सूपान्ता पायसादयः।
संयावसूप शष्कुल्यः सर्व दोहश्च गृह्यताम् ॥
हूयन्तामग्नयः सम्यक् ब्राह्मणैः ब्रह्मवादिभिः।
अन्नं बहुविधे तेभ्यो देयं वो धेनु दक्षिणा ॥

× × × × ×

१२ दिवाली—

स्वलंकृता भुक्तवन्तः स्वनु लिप्ताः सुवाससः।
प्रदक्षिणं च कुरुते गोविप्रानल पर्वतान् ॥
अयं च गो ब्राह्मणाद्रीणां मह्यं च दीयतांमखः।
[१०-२४-२५-३० तक]

१३ गोपाष्टमी—

ततश्च पौगण्ड वयः श्रितौ व्रजे बभूवतुस्तौ पशुपाल संमतौ।
गांश्चारयन्तौ सखिभिःसमं पदैर्वृन्दावनं पुण्यमतीव चक्रतुः ॥
[१०-१५-१]

पादुकाजी की सेवा में युधिष्ठिर भगवान के समक्ष कहि रहे हैं—त्वत्पादुके अविरतं परि ये चरन्ति ध्यायन्त्यभद्रनशने शुचयो गृणन्ति। विन्दन्ति ते कमलनाभ-भवाप वर्गमाशा सते यदित आशिष ईश नान्ये। तद् देव-देव भवतश्चरणारविन्द सेवानुभावमिह पश्यतु लोकएषः। येत्वांभजन्ति न भजन्त्युत वो नयेषां निष्ठां प्रदर्शय विभो कुरू सृंजयानाम्। न ब्रह्मणः स्वपरभेदमतिस्तव स्यात् सर्वात्मः समदृश स्वसुखानुभूतेः। संसेसवता सुरतरोरिवते प्रसाद सेवानुरूप मुदयो न विपर्ययोत्र।
[१०-७२-४-५-६]

१४ प्रबोधिनी—

एकादश्यां निराहारः समभ्यच्य जनार्दनम् ।
दयान्मे श्रद्धायार्चकः ॥ [१०-२८-१]
गुड़पायस सर्पींषि षष्कुल्या पूयमोदकान् ।
संयावदधि सूपाश्वनैवेद्यं सति कल्पयेत् ॥ [११-२७-३४]

१५ गोप मासारम्भ—

हेमन्ते प्रथमे मासे नन्द व्रज कुमारिकाः ।
चेरुर्हविष्यं भुञ्जानाः कात्ययन्यर्चयद्व्रतम् ॥ [१०-२२-१]

१६ बसन्त—

स च वृन्दावन गुणैर्वसन्त इव लक्षितः ।
यत्रास्ते भगवान् साक्षात् रामेण सहकेशवः ॥ [१०-१८-३]
वरमस्तु वासुदेवांशो दग्धा प्राक् रुद्र मन्युना ।
देहोपपत्तये भूपस्तमेव प्रत्यपद्यत ॥
सएव जातोवेदेभ्यां कृष्ण वीर्य समुद्भवः ।
प्रद्युम्नइति विख्यातः सर्वतः नवमः पितु ॥ [१०-५६-१-२]

१७ रामनवमी—

तस्यापि भगवान् एष साक्षाद् ब्रह्ममयो हरिः ।
अंशांशेन चतुर्भागात् पुत्रत्वं प्राथितेपुरा ॥
राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्ना इति संज्ञया । [१६-१०-२]

१८ अक्षय तृतीया चन्दन धारण—

तत्रैकांसगतं बाहुं कृष्णस्योत्पल सौरभम् ।
चन्दनालिप्तमाघ्राय हृष्ट रोमा चुचुम्बह ॥ [१०-३३-१२]

१९ नृसिंह जयन्ती—

सत्यं विधातुं निज भृत्य भाषितं व्याप्तिच भूतेस्वाखिलेसु चात्मनः ।
अदृश्यतात्पतदद्भुत रूपमुद्वहन् स्तम्भे सभायां न मृगं न मानुषम् ॥
[७-८-१८]

२० अक्षय तृतीया—

काचित् दधार तद्बाहु अंसचन्दन रूषितम् ॥ [१०-३०-४]

२१ ग्रीष्मावसर छिड़काव फुहारे चलवे को वर्णन—

यन्त्र निर्झर निह्लाद निवृत स्वन झिल्लिकम् ।
शकृच्छीकर जीर्ष द्रुम मण्डल मण्डितम् ॥
सरित्सर प्रस्रवणोर्मि वायुना कल्हार कञ्जोत्पल रेणुहारणा ।
नविद्यते यत्र वनौकसांदवो निदाघवन्ह्यर्क नवोति शाद्वले ॥
अगाधतो याह्रदनी तरौमिभिर्द्रवत्पुरीष पुलिनैः समन्ततः ।
नयत्र चण्डांसु करा विषोल्वणाभुवोरसंशाद्वलितं चगृह्यते ॥
[१०-१८-४-८]

२२ पुष्प शृंगार—

प्रवाल बर्हस्तवक स्रग् धातुकृत् भूषणा ।
राम कृष्णादयो गोपा ननृतुर्युयुधुर्जगुजगुः ॥

२३ स्नान यात्रा—

सलिलै स्नापयेत् मन्त्रैनित्यदा विभवैसती ।
स्वर्ण घर्मानुवाकेन महापुरुष विद्यया ॥ [११-२७-३१-३]
सोक्रस्यलं युवतिभिः परिसिच्यमात्रा ।
प्रेम्णाक्षिताप्रसतीं भिरितास्ततोङ्क ॥
वैमनिकैः कुसुम वर्षिभिरीड्यमानो ।
रेमेस्वयं स्वरति रत्नगजेन्द्रलील ॥
ततश्च कृष्णोपवने जल स्थल,
प्रसून गन्धानिल जुष्ट दिक्तटे ।
चचार भृङ्ग प्रमदा गणा वृतो,
यथामच्युत द्विरदः करेणुभिः ॥ [१०-३३-२४-२६]

२४ रथ यात्रा—

गोप्योरूढ़ रथानून्न कुचकुंकुम कान्तयः ।
कृष्ण लीला जगुः प्रीत निष्क कंठ्यश्च सुवाससः ॥
तथा यशोदा रोहिण्यावेकं शकटमास्थिते ।
रेजतुः कृष्ण रामाभ्यां तत्कथाश्रवणोत्सुके ॥ [१०-३३-३४]

२५ श्रावणको झूला

श्रीर्यत्र रुपण्यरुगाय पादयो करोति मानं बहुधा विभूतिभिः ।
प्रेङ्खाश्रीताया कुसुमा करानुगैर्विगीयमाना प्रिय कर्म गायती ॥
क्वचित् स्यान्दोलिकया । [१०-१०-१५]

हिन्डोला चार स्थान में यमुना नदी, कुञ्ज, गिरिराज, नन्दालय की छाक के वर्णन में ।

एवं तौ लोक सिद्धाभिः क्रीडाभिः श्वेरतुर्वने ।
नद्यद्रि द्रोणि कुंजेषु काननेषु सरस्सुच ॥ [१०-१८ १६]

शीतकालिक एवं अन्य सेवा में।

तयोर्यशोदा रोहिण्यो पुत्रयोपुत्र वत्सले।

यथा कामं यथा कालं व्यधत्तां परमाशिषः॥ [१०-१५-४४]

(१) उत्सव श्रीनाथजी में दो प्रकार से माने जाय है एक देहली वन्दनवार बधाई गवें एवं विशेष सामग्री अरोगाई जाय।

(२) केवल शृंगार एवं शृंगारवत् पद कीर्तन तथा गोस्वामियों के यहाँ के वस्त्र सामग्री शृंगार होय इनमें देहली वन्दनमाल नहीं होय। **देहली वन्दन माल विशेष सामग्री कीर्तन के उत्सव—**

(१) महाप्रभुजी (२) श्री गुसाँईजी विट्ठलनाथजी (३) गिरधरजी रघुनाथजी (४) गोविन्दजी (५) बालकृष्ण जी (६) गोकुलनाथ जी (७) यदुनाथ जीं (८) घनश्याम जी (९) गोपीनाथजी।

ये टीक्रेतनके उत्सव

(१) दामोदरजी (२) विट्ठलेशराय जी पिटारा वारे (३) लाल गिरधर जी (३) दामोदरजी मेवाड़ पधरावे वारे (५) विट्ठलेशजी (६) गोवर्धनेशजी (७) गोविन्दजी (गिरधारीजी घस्यारवारे) (९) दाऊजी दुहेरामनोरथकर्ता (१०) गोविन्दजी (११) गिरधारीलालजी (१२) गोवर्धनलालजी (१३) दामोदरलालजी (१४) गोविन्दलालजी (१५) दाऊजो (१६) इन्द्रदमनजी।

इनके किये उत्सव (मनोरथ)

(२) गोवर्धनेशजी कृत सात स्वरूपोत्सव (२) दाऊजी कृत चार स्वरूपोत्सव (३) छः स्वरूपोत्सव (४) गोवर्धनलालजी कृत पाँच स्वरूतोत्सव (५) गोविन्द जी कृत सात स्वरूतोत्सव।

केवल शृंगार एवं पद गान।

ये विट्ठलेशरायजी के घर के हैं।

कल्याणरायजी।	हरिरायजी।	गोविन्दजी प्रथमलहरिया।
(१)	(२)	(३)
गोविन्द जी।	गोपेश्वरी जी।	गिरधरजी।
(४)	(५)	(६)

काका वल्लभजी बालकृष्ण जी काँकरोली तथा अन्य श्रीजी के संग आये सो काका वल्लभजी बालकन के भी होवे हैं।

पदन के आधार के शृंगार अठारह जो या प्रकार है।

१ पीत पिछोरी कहाँजु विसारी। २ आज धरें गिरधर पिय झोली।
३ आज हरि देखे री नंगमनंगा। ४ सोहत श्याम मनोहर गात।
५ आवरी वावरी उजरी पाग पे। ६ आज बने नन्द नन्दन री नव।
७ सोहत लाल परदनी झीनी। ८ मणिमय आगन भीड तरंग।
९ हों ब्रजवासिन को मंगता। १० पीत दुमालोबन्यो कंठमों।
११ राते पीरे बने टिपारे १२ टेर टेर बोलत नन्द नन्द।
१३ कित ह्वै जेंहो साँवरे मेरे ओयेभोर १४ पीताम्बर का चोलना
१५ पाछली रात या तनकी १६ अवही डार देरे इडुरिया
१७ सोहत नोरंग दोरंग पाग लला। १८ शिर सोने के सूतन सोहत।

षड्रितु वर्णन वेद मन्त्रों में—

दुहेरामनोरथ कर्ता श्रीगोस्वामि तिलक दाऊजी महाराज ने सर्वप्रथम कियो बारह महिना में दो-दो महिना रितु मानी जाय है वह छः रितु **वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर।**

"मधुश्व माधवश्य वसन्तिकाश्ववृतुश्व शुचिश्व शुक्रश्व ग्रैष्मावतू नमश्व नमसत्य च वार्षिका वृतुश्वश सहस्व सहस्य छ हेमन्ति का वृतूश्व तयश्व शैशववृतू रितु"

चैत्रो माधवो मधुप्रोक्तो वैशाखे माधवो भवेत्॥
जेष्ठे मासस्य शुक्रस्यात्दाशाडा शुचि रुच्यते॥
नभो मासः श्राबण स्यात् नभस्यो भाद्र उच्यते॥
ईशच्याश्व युजा मासः कार्तिकश्वोर्ज संज्ञकः॥
सहोमासा मार्गशिर सहश्च पुष्प नामकः॥
माघ मास स्तयोप्रोक्ता तपस्व फाल्गुन स्मृतिः॥

ऋतुओं की पञ्चविधि सोमोपासना—

छान्दोज्ञोपनिषद में हेमन्त और शिशिर एक मानी है। याही प्रकार पाँच रितु मानी है इन पाँचो रितु के अनुसार पञ्च विधि सोमोपासना वनायी गई है।

वसन्त—भगवत् विभूति

"ऋतुनां कुसुमाकरः"

रितु में हींकार भावना से उपासना करें।

जेष्ट अषाढ़ ग्रीष्म

वर्षा—वर्षा श्रावण भांद्रपद

शरद—आसोज कार्तिक

हेमन्त—मृगसर पोष माघ

मासद्वयात्मक कालः ऋतु प्रोक्तो विचक्षणः।
यत्रस्तु द्वादशा मास पञ्चर्तव इतिश्रुतः।।
तत्र हेमन्त शिशिरयो एकत्रिकरणं किविक्षितम्।

भक्तों की वाणी में रितु नाम।

वर्षा—अवधि गई वर्षा रितु आई।

शरद—शरद सुहाइ यामिनी भामिनी रास रच्यो।

हेमन्त—हिमकर सुखद सरस रितु आई।

शिशिर—बिहरत वसन्त समय रितु आई।

वसन्त—ऋतु वसन्त मुकुलित द्रुमवेली।

ग्रीष्म—आज मोहि आगम अंगम जनायो।
ग्रीषम रितु सुख देन नाथ कों यह अवसर आपहि चलि आयो।

ति० ली० गोस्वामी, हरिकेशनलालजी, गिरधरलालजी, महाराज के वचनामृत से उद्धृत श्रीनाथजी के द्वादश मास की सेवाक्रम चार यूथाधिपान के के आधार से ३६४ दिन क्रम।

४१ वसन्त धमार फाग होरी यामें माघ शुक्ला ५ से फागण सुदी
१० १० १० १० तक सेवा के ४१ दिन भये
एक दिन डोलको। यों ५ दिन होरी ५ दिन डोल।

४८ कुञ्ज निकुञ्ज निविड़ निकुञ्ज निभृत निकुञ्ज—चैत्र कृष्ण २ से
१२ १२ १२ १२ वैशाख शुक्ला ६ तक

६० चन्दन लीला खसखाना पुष्प शृंगार जल विहार
१५ १५ १५ १५ वैशाख शुक्ला ३ से असाढ़ शुक्ला ३ तक

१२ मल्हार द्वादश निकुञ्ज की द्वादश दिन रथ यात्रा अषाढ़ शु० ३ से
तीन-तीन दिन एक-एक व्रज भक्तन के अषाढ़ शु० १५ तक द्वादश दिन
श्रावण के झूला के दिन ३२ प्रति सखीन के आठ-आठ दिन

३२ नन्दालय गिरिराज यमुना पुलिन कुञ्ज ३२
८ ८ ८ ८

२० जन्मलीला बाललीला राधालीला ढाढीलीला दिन बीस
५ ५ ५ ५ श्रीमद्भागवत में १८ श्लोक
नन्द महोत्सव के तासों ५० शृंगार

२० भाद्रपद कृष्ण तीज से लेकर भादपद शुक्ला १० तक २० दिन की लीला
दान २० दिन प्रति भक्त के पाँच-पाँच। भाद्रपद शुक्ला ११ से
गहवरवन दानघाटी पनघट वृन्दावन आ. कृ. ३० तक दिन=२०
५ ५ ५ ५

४० नवविलासवेणु रासलीला गोवर्द्धन पूजा इन्द्रमानभंग आश्विन
१० १० १० १० शु० १ से कार्तिक
शुक्ला १० तक
मान रंग महल लीला शीत कालिक सुख विरह
व्रतचर्या खण्डिता हिलग मिषान्तर
२० २० २० २० कार्तिक शुक्ला ११ से माघ शु०
४ तक ६० दिन

ये ३६५ (तीन सौ पैंसठ) दिन की लीला चार यूथाधिपान के साथ है।

बाललीला की सुबोधिनी आधार चार लीला मुग्धलीला, धार्ष्ट्यलीला, धूर्तलीला, स्वतः सिद्ध। इनमें गत-गत विशेष में दशधा कह्यो वे द्वादश प्रकार या रूप से हैं—

मुग्धलीला—

१ गोद में क्रीड़ा	२ पलना में
३ अंगुष्ट चोषण	४ घुटुवन चलन
५ गोदी में शयन	६ पृथ्वी शयन
७ ब्रह्म दर्शन	८ महादेव लीला
९ चन्द्र दर्शन	१० प्रहसित गोविन्द
११ मणि खम्भ	१२ परछाई दर्शन
१३ चतुर्भुज लीला	१४ पायन चलन
१५ नृत्य	१६ दही खेल
१७ मचलते गोविन्द	१८ आँख-मिचौनी
१९ सातनारी	२० फल-भक्षण
२१ चुटिया लीला	२२ पणिलीला
२३ दम्पति क्रीड़ा	२४ आवाज से पधारनो
२५ नवरत्न दर्शन	२६ मुख में शालिगराम
२७ वाक् चातुरी	२८ माखन चोरी
२९ उरहना	

पदन में बारह महीना के नाम—

१ आयोरी फागुन मास बोले सब होरी-होरा
२ नोमी चेत की उजियारी
३ शुभ वेशाख कृष्ण एदादशी श्रीवल्लभ प्रभु प्रकट भये
४ मंगल जेष्ठ जेष्ठा पूनम करत स्नान गोवर्द्धनधारी
५ श्रावण सुद तृतिया उजियारी

७ **भादों** की अति रेन अन्धयारी

८ **आश्विन** वदी तेरसकों प्रकटे बालकृष्ण.सुखदाई

९ **कार्तिक** सुद दुतिया के दिन हलधर सहित सुभद्रा के आये

१० **अग्रहन** सुदी साते शुभ दिन आयो

११ **पोष कृष्ण** नोमी के शुभ दिन पूत अकाजु जायो

१२ प्रकटे भक्त शिरोमणि राम **माघ** मास सुद । चोथ है हस्त नक्षत्र रविवार

पार्वणिकोत्सव—यह उत्सव पर्वों पर तथा नक्षत्र प्रधान लौकिक त्यौहारों से संवेष्टित होय है—

होली, डोल, दिवाली, राखी, स्नान-यात्रा, रथयात्रा, अक्षयतृतिया, प्रबोधिनी, भाईदूज, ठकुरानी तीज, गणगोर, अक्षय नवमी, नागपञ्चमी, धनतेरस, रूप चऊदस, दशहरा, मकर-संक्रांति चारो जयन्ति, (राम, कृष्ण, नृसिंह, वामन,) अषाढ़ी कसूम्बाछठ, हरियाली मावस । कुल पार्वणिकोत्सव २४ होय है ।

महामहोत्सव—नन्द महोत्सव में पलना दधिकांदो नन्द जसोदा.गोपी ग्वाल चार, ब्रज भक्तन के भाव से चार प्रकार के वाद्य मृदंग झांझ नौबत मांदल । सुवासनी गीत सारे उपक्रम नव उत्सव स्वरूप होय ।

अन्नकूटदिवाली—चार शृंगार, महायज्ञ स्वरूप ६ आरती दोनों दिन विशेष महायज्ञ की सेवा में विशेष सेवा ।

डोला—चारभोग चार यूथाधिपान के भाव सों धरें खेल चार-चार बीड़ी अरोगे तथा आरती आदि सेवा में खेल बड़े । यामें डोल छः दिन गवें । शयन राजभोग में ।

महारास—भीतरकी सेवा सारे उत्सवाङ्ग उपक्रम शयन में गुप्त सेवा भावना से होय ।

महादान—यामें अन्तरंग ब्रज भक्तन की अन्तरंग लीला—

या प्रथम तरंग को वर्णन सत्य कवि द्वारा—

गोवर्द्धनधर श्रीनाथजू की उत्सव माल,
ग्रन्थ ये सम्पूर्ण भयो भाग रस चार में ।
प्रथम चन्द्रावलि गोस्वामीं विट्ठलवर,
स्नेह के प्रगाढ़ता में होरी ओ धमार में ।
कुञ्ज ओ निकुञ्ज की लीला रस पूर्ण यामें,
संगत समाज संग वन-वन विहार में ।
चंचल चपल चारू चतुर चन्द्रावलि,
साथी तीन.मास सेवा **'सत्य'** सुखसार में ।

श्रीनाथजी

श्रीनाथ–सेवा–रसोदधि

द्वितीय तरंग

बैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़

की

श्री यूथाधिपा

श्री यमुनाजीमहारानी